रोज़े में आधुनिक उपचार पद्धति का इस्तेमाल

सत्रहवां फ़िक्ही सेमिनार (बुरहानपुर) दिनांक 28-30 रबीउल अव्वल 1429 हिजरी, 5 - 7 अप्रैल 2008 ई॰ को आयोजित हुआ

.1 दिल के रोग से सम्बन्धित जो दवा ज़ुबान के नीचे रखी जाती है यदि रोज़ा की हालत में उसका इस्तेमाल किया जाए और उसके अंश या इस दवा के मिले हुए थूक को निगलने से पूरे तौर पर बचा जाए तो रोज़ा .ख़राब नहीं होगा।

.2 सांस के रोग में इन्हेलर के इस्तेमाल से रोज़ा .ख़राब हो जाएगा।

.3 जो दवा भाप के रूप में मुंह या नाक द्वारा खींची जाए चाहे मशीन के द्वारा खींची जाए या किसी और तरीके से, इनसे रोज़ा फ़ासिद यानी ख़राब हो जाएगा।

.4 इन्जेक्शन द्वारा जो दवा रगों (नसों) या मांस में पहुँचायी जाती है चाहे उससे केवल दवा की ज़रूरत पूरी की जाए या आहार की, रोज़ा इससे नही टूटता, अलबत्ता यह एक तरह से मनुष्य के आहार की कमी को भी पूरी करता है इसलिए बिना किसी शरई कारण इंजेक्शन मकरूह है।

.5 ग्लुकोज़ चढाने से रोज़ा नहीं टूटता किन्तु यह एक हद तक इंसान की खाने की ज़रूरत पूरा करता है इसलिए बिना ज़रूरत मकरूह है।

.6 (अ) यदि रोज़े की हालत में पाखाना के बाहर आने वाली नली का अन्तिम भाग, जहां से बड़ी अति आरंभ होती है वहां तक यदि दवा पहुंचा दी जाए तो इससे रोज़ा टूट जाएगा चाहे दवा तरल पदार्थ में हो या ठोस।

(ब) बवासीरी मस्सों पर दवा लगाने से रोज़ा नहीं टूटेगा, फिर भी अकारण आवश्यकता न होने पर इसका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

(स) अमाशय के रोगों की जांच के लिए पीछे के रास्ते से केवल आला दाखिल करने से रोज़ा नहीं टूटता, अलबत्ता यदि इस आले मे कोई तरल पदार्थ या दवा लगायी गयी हो तो रोज़ा टूट जाएगा।

.7 (अ) औरत की शर्मगाह (गुप्तांग) के बाहरी हिस्से में दवा लगाने से रोज़ा नहीं टूटेगा लेकिन अन्दर के हिस्से में दवा रखने से रोज़ा टूट जाएगा।

(ब) मर्द की शर्मगाह (गुप्तांग) मे दवा या नलकी डालने से रोज़ा नहीं टूटेगा।

(स) रोग की जांच के लिए गर्भ तक औज़ार को पहुंचाया जाए और उन औज़ारों पर दवा या कोई और वस्तु लगाई गयी हो तो रोज़ा टूट जाएगा।

☆☆☆